thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 4 12 से 18 मार्च, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 चै. कृ.-06

दिल्ली के प्रतापनगर आर्य समाज में होली मिलन का भव्य समारोह

आसुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध संकल्प लेने का पर्व है होली

– स्वामी आर्यवेश

समाज में सौहार्द एवं परस्पर प्रेम की भावना को दें वरीयता

– डॉ. अनिल आर्य

स्कूल के छात्र-छात्राओं एवं उपस्थित सैकड़ों आर्यजनों ने गुलाब की पंखुड़ियों से मनाई होली

उत्तरी दिल्ली की डेढ़ दर्जन आर्य समाजों के पदाधिकारी हुए कार्यक्रम में सम्मिलित

आर्य समाज प्रतापनगर, दिल्ली के प्रांगण में 4 मार्च, 2015 को आयोजित होली मिलन समारोह का भव्य आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में उल्लास एवं धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के अन्तर्गत चल रहे उच्च विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने कई मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत कर उपस्थित जन-समूह को उल्लास से भर दिया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्र के डी. सी. पी. श्री महेश बत्रा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में क्षेत्र के युवा विधायक श्री सोमदत्त शर्मा सम्मिलित हुए और उपस्थित जन-समुदाय को होली की शुभकामनाएँ प्रदान की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य ने होली पर्व पर प्रकाश डालते हुए लोगों का आह्वान किया कि वे सामाजिक सौहार्द एवं परस्पर प्रेम की भावना को जीवन में वरीयता दें। होली के पावन पर्व पर विभिन्न समुदायों के लोग परस्पर मिलकर एवं एक-दूसरे को शुभकामनाएं देकर घृणा, नफरत एवं संकीर्णता के विरुद्ध आदर्श प्रस्तुत करें। श्री अनिल आर्य ने आर्य समाज के पदाधिकारियों विशेष रूप से के. के. सेठी को इस आयोजन की सफलता के लिए बधाई दी। उन्होंने उत्तरी दिल्ली से आये लगभग डेढ़ दर्जन आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का भी अभिनन्दन करते हुए आर्य समाज को संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने होली पर्व के महत्त्व पर अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि शरद ऋतु के पश्चात् बसन्त ऋतु के प्रारम्भ होने के साथ ही नई फसल खेतों में पकने के साथ ही लोगों में खुशी एवं उल्लास का वातावरण बन जाता है। अपनी इस खुशी को प्रकट करने के लिए लोग सामूहिक रूप से होली का उत्सव मनाते हैं। गाँव-गाँव में समाज के सभी वर्गों के लोग मिलकर होली जलाते हैं और उत्पादित अन्न को परमात्मा को समर्पित करते हैं और उसके बाद उसमें गेहूँ और जौ की बालियाँ भूंजकर बड़े आनन्द के साथ-साथ सबको बांटते हैं और साथ-साथ खाते हैं। खेल-कूद के आयोजन करते हैं, मेले लगते हैं, दंगल होते हैं और विशेष प्रकार के उत्साह, तथा प्रसन्नता की उमंग सब जगह व्याप्त हो जाती है।

स्वामी जी ने बताया कि होली के नाम पर प्रहलाद एवं हिरण्यकश्यप की कहानी को लोग जिस रूप में मानते और जानते हैं वह सही नहीं है। बल्कि यदि हम इसको आसुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध आध्यात्मिक शक्तियों की विजय के रूप में देखें तो इससे मानव मात्र को नई दिशा तथा प्रेरणा मिल सकती है। सही अर्थों में होली के पर्व को आसुरी शक्तियों के विरुद्ध संकल्प लेने का पर्व मानना चाहिए। साथ ही सुख-समृद्धि एवं सामाजिक सौहार्द के लिए संकीर्णता एवं संकुचित मानसिकता से ऊपर उठकर पूरे समाज में प्रेम एवं भाई-चारे की भावना फैलानी चाहिए। इसके लिए विशेष रूप से नशाखोरी एवं अश्लीलता आदि कुरीतियों से दूर रहने की जरूरत है। प्राय: देखा जाता है कि धुलेण्डी वाले दिन लोग शराब, भांग, गांजा, धतूरा आदि के नशों से सराबोर होकर होली खेलने के नाम पर स्त्रियों पर कीचड़ एवं गन्दा पानी फेंकते हैं। नशे में अश्लील हरकते करते हैं जिससे अनेक स्थानों पर झगड़े, मारपीट एवं गोलियाँ तक चल जाती हैं। अगले दिन के

अखबार इस प्रकार की घटनाओं से भरे पड़े होते हैं। इसी प्रकार घटिया रंग का इस्तेमाल विशेषकर युवा वर्ग करता है जिससे लोगों में चर्मरोग ही नहीं, आँखे व कान भी रुग्ण हो जाते हैं। इस प्रकार से होली मनाने का तरीका हमारी संस्कृति में नहीं है। अत: इस अपसंस्कृति को बदलकर होली मनाने की सात्विक शैली अपनानी चाहिए।

स्वामी जी ने सम्पूर्ण आर्य जगत का आह्वान किया कि समाज में प्रचलित गलत परम्पराओं, रुढ़ियों एवं मान्यताओं के विरुद्ध अब मजबूती से खड़े होने की जरूरत है और समाज को वैदिक संस्कृति के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने की जरूरत है। ताकि समाज सुख, समृद्धि, शांति की ओर आगे बढ़ सकें। स्वामी जी ने योगेश्वर कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति के दो महान पुरुषों श्रीराम और श्रीकृष्ण जी ने अपने जीवन में सदा अन्याय, अत्याचार एवं आसुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष किया। आज हम लोग इन महापुरुषों को जिस रूप में मानते हैं और जिस रूप में उनकी पूजा करते हैं उससे न केवल उन महापुरुषों का अपमान होता है, बल्कि हम भी अज्ञान के अंधेरे में डूबे रहने के सिवाय कुछ प्राप्त नहीं कर पाते हैं। जिस योगेश्वर कृष्ण ने अन्यायियों एवं आततायियों के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष किया आज उसको नकली कृष्ण बनाकर पैरों में घूंघुरू बाँधकर एक नाचने वाला कृष्ण बना दिया गया है। सुदर्शन चक्र जैसे अस्त्र-शस्त्र के बल पर आसुरी प्रवृत्तियों को चुनौती देने वाले के हाथ में बांसुरी थमा दी और संयम, सदाचार एवं तप का जीवन जीने वाले योगीराज कृष्ण को रासलीला रचाने वाला गोपियों के वस्त्र चुराने वाला माखन चोर एवं चूड़ियाँ बेचने वाला बनाकर उस युग पुरुष का घोर अपमान किया जा रहा है। इसी प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जिन्होंने जंगल में ऋषियों, मुनियों एवं आचार्यों के हड्डियों के लगे ढेर को देखकर घोषणा की थी कि **'निशिचर हीन करूँ महि भुजा उठा प्रण कीन्ह।'** अर्थात् उन्होंने कहा कि हाथ उठाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि पृथ्वी को राक्षसविहीन बनाकर छोड़ूंगा। ऐसे बीर राजा रामचन्द्र को आज मंदिर में एक मूर्ति बनाकर बैठा दिया गया है। स्वामी जी ने जनसमूह को कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध संकल्प दिलवाया और कहा कि आर्य समाज पूरे देश में जन-आन्दोलन चला रहा है। इन तीनों समस्याओं से समाज निरन्तर पतन की ओर जा रहा है। स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान किया कि अब कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप के विरुद्ध युवाओं की जवानी को निगलने वाली नशाखोरी के विरुद्ध एवं धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध पूरे देश में युद्ध स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। सभी आर्यजन इस कार्य में जुट जायें और अपने कार्यों की सूचना 'वैदिक सार्वदेशिक' पत्रिका में प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें।

समारोह में सर्वश्री रवीन्द्र मेहता, महेन्द्र भाई, हीराप्रसाद शास्त्री, रामकुमार सिंह आर्य, अश्विनी कोहली, शिशुपाल आर्य, अभयदेव शास्त्री-आर्य समाज गुजरांवाला टाऊन, भूदेव शास्त्री-आर्य समाज जे. जे. कालोनी, वजीरपुर, सुधीर घई-मंत्री आर्य समाज बिड़ला लाइन्स, अमरनाथ गोगिया-प्रधान आर्य समाज मॉडल बस्ती, जीवन लाल-मंत्री आर्य समाज अशोक विहार, फेस-1, वीरेन्द्र आहुजा-आर्य समाज गुड़मण्डी, आदर्श कुमार-मंत्री आर्य समाज मॉडल बस्ती, देवेन्द्र भगत-मंत्री आर्य समाज कबीर बस्ती, पी. डी. शर्मा-रिटायर्ड ए. सी. पी. प्रधान आर्य समाज तिमारपुर, गोपाल आर्य-प्रधान आर्य समाज किंग्सवे कैंप, राम भरोस-मंत्री आर्य समाज जहांगीरपुरी, संजीव आर्य-मंत्री आर्य समाज सुभद्रा कालोनी, इन्द्र कुमार शास्त्री-धर्माचार्य आर्य समाज प्रतापनगर, वीरेन्द्र कपूर-प्रधान, गुलशन राय-कोषाध्यक्ष, के. के. सेठी-मंत्री आर्य समाज प्रतापनगर, विरजानन्द महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरिसिंह चौहान-आर्य समाज शक्तिनगर, ओम सपरा-मंत्री उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल आदि ने स्वामी जी का माल्यार्पण से स्वागत किया। आर्य समाज की ओर से प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार, मंत्री-श्री के. के. सेठी, कोषाध्यक्ष-श्री गुलशन राय तथा स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती ज्योति शर्मा ने स्वामी जी को शॉल एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था में स्कूल के स्टाफ तथा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ताओं ने विशेष भूमिका निभाई। परिषद् के व्यायाम शिक्षक श्री सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य एवं माधव आर्य ने कार्यक्रम की पूरी व्यवस्था संभाल रखी थी। कार्यक्रम के उपरान्त जलपान तथा अल्पाहार की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

स्मृति-शेष वैद्य राजेन्द्र प्रकाश जी

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

ज्ञान-वृद्ध एवं वयोवृद्ध आदरणीय वैद्य पं. राजेन्द्र प्रकाश जी शर्मा, प्रीत नगर, मवाना, मेरठ का निधन गत 20 फरवरी को अपने गृह निवास पर हो गया। उनके निधन की सूचना जब अपने शुभाकांक्षी माननीय श्री एस. सी. पुण्डीर जी भेल, हरिद्वार के माध्यम से मिली तो सुनकर सहसा विश्वास नहीं हुआ, आज भी नहीं हो रहा कि वे नहीं रहे। कुछ दिन पूर्व ही उनसे दूरभाष पर संवाद हुआ तो बता रहे थे कि कुछ अस्वस्थ महसूस कर रहा हूँ। यह अस्वस्थता तो वर्षों से बनी हुई थी क्योंकि मोटापा और अस्थमा उन्हें प्राय: असहज बनाये रखते थे। लेकिन वे अद्‌भुत जीवट के व्यक्ति थे, 80 वर्ष की आयु पार कर सन् 2002 में वे स्वामी रामदेव जी के पतंजलि योग ट्रस्ट में बतौर वरिष्ठ वैद्य नियुक्त हुए थे और लगभग दस वर्ष तक यहां सेवारत रहे। वहां अस्वस्थ होने पर उन्हें रामकृष्ण मिशन अस्पताल में उपचारार्थ प्रवेश दिलाया गया और वहीं से उन्हें बलात घर भेज दिया गया। पतंजलि योग ट्रस्ट के इस व्यवहार से वे क्षुब्ध थे लेकिन करते क्या? आयु व अस्वस्थता को लताड़ते हुए उन्होंने घर से ही प्रैक्टिस जारी रखी और अंतिम श्वास तक श्रम करते रहे, उससे न मूँह मोड़ा न जी चुराया। अपने मिशन के प्रति वे पूर्णतया निष्ठावान और समर्पित थे। उनके इसी व्यक्तित्व को समादृत करते हुए गत वर्ष पतंजलि योग ट्रस्ट ने आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित किया। इससे उनके गिले-शिकवे दूर हुए। वृद्धावस्था में व्यक्ति का स्वभाव बालक के समान हो जाता है अत: कब रूठ जाये, कब मान जाये, कुछ कहा नहीं जा सकता।

सन् 2003 के किसी अंतिम महीने में मेरी उनसे प्रथम भेंट पतंजलि योग ट्रस्ट के कनखल स्थित भोजनालय में हुई थी। वे स्वभाव से विनोदी और मिलनसार थे अत: हर नवागन्तुक को टोकने से वे अपने को रोक नहीं पाते थे। ट्रस्ट की पत्रिका 'योग संदेश' के प्रबन्ध सम्पादक का दायित्व मुझे सौंपा गया था। उनकी लेखन कार्य में रुचि थी अत: मेरी ओर उनका आकर्षण विशेष रूप से हुआ। यह प्रथम मिलन कब सहजता, प्रगाढ़ता और आत्मीयता में बदल गया कुछ पता ही नहीं चला। कनखल बाजार में दही-भल्ले खाने हों, गंग नहर पर टहलने जाना हो, हर की पौढ़ी पर जाना हो अथवा हरिद्वार सब्जी-मण्डी के पास की एक पुरानी व प्रसिद्ध दुकान पर कचौरी खाने जाना हो वे परहेज और स्वास्थ्य की परवाह किये बिना मेरे साथ चल देते थे अथवा मुझे स्वयं आमंत्रित कर लेते थे। हर वर्ष हरिद्वार स्थित भेल में कवि सम्मेलन और मुशायरा आयोजित होता था। रात्रि में लगभग एक-दो बजे तक चलता था। मित्रवर पुण्डीर साहब भेल में ही उप-निदेशक के पद पर कार्यरत थे और विशेषत: हम दोनों को कार से ले जाने व वापस छोड़ने का दायित्व वे ही वहन करते थे। वापसी पर वैद्य जी आश्रम स्थित मेरे कमरे में ही रात्रि-शयन करते थे क्योंकि ट्रस्ट की ओर से उनके आवास की व्यवस्था कृपालु बाग आश्रम, कनखल से बाहर की गई थी। दोपहर का भोजन करने के उपरान्त वे प्राय: मेरे कमरे में ही विश्राम करते थे क्योंकि चलने में असुविधा के कारण अपने आवास पर जाना उनके लिए कठिन था।

व्यवसाय से वे वैद्य थे लेकिन हर सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक समस्या पर भी उनका गहरा चिन्तन था। यजुर्वेद के शिव संकल्प के छ: मन्त्रों पर उनके छ: लेख योग-संदेश में मेरे रहते प्रकाशित हुए थे। प्रतिमाह किसी रोग अथवा औषधीय पौधे पर एक लेख वे आचार्य बालकृष्ण के लिए तैयार करते थे। बाद में जब मैं 'योग-संदेश' को छोड़ 'वैदिक सार्वदेशिक' का प्रबन्ध सम्पादक बन दिल्ली आया तो इस पत्रिका में भी उनके कई लेख प्रकाशित हुए। बुढ़ापे के कारण जब हाथ से लिखने में असमर्थ रहे तो कुछ लेख मुझसे भी लिखवाते रहे जिनके लिए आइडिया व दिशा-निर्देश वे स्वयं देते थे। जाहिर है मृत्यु-पर्यंत उनका रचनात्मक चिन्तन सतत बना रहा।

उनकी आत्मीयता के अनेक उदाहरण इस समय मुझे स्मरण आ रहे हैं। मरीजों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ने के कारण आश्रम के नियम कुछ सख्त हो गये थे अत: अपने नम्बर पर ही प्रत्येक मरीज वैद्य के पास जा सकता था। जब भी मेरा कोई दूर-दराज का परिचित मरीज आता और मैं उन्हें टेलीफोन पर सूचित करता तो वे सुविधानुसार या तो लंच में मेरे कमरे पर ही मरीज देखते अथवा मरीज को पिछले दरवाजे से आने को कहते। यह सुविधा मेरे वहां रहते ही नहीं, बल्कि दिल्ली आने पर भी वे देते रहे। कनखल में मुझे उनका प्रत्यक्ष सान्निध्य केवल दो वर्ष मिला लेकिन अपनी आत्मीयता का पुण्य लाभ वे मुझे मृत्यु पर्यंत अर्थात् 2005-2015 के मध्य तक देते रहे। बीच में एक बार कुछ मरीजों को दिल्ली से उनके गृह-निवास ले गया। प्रत्यक्ष रूपेण यही अंतिम भेंट थी। दूरभाष पर हर महीने उनसे संवाद होता ही रहता था, मिलने का बराबर आग्रह करते रहते थे, जो सम्भव न रहा। कनखल आश्रम में मेरे रहते कई उतार-चढ़ाव आये जिनके हम प्रत्यक्षदर्शी थे और प्राय: इन्हें लेकर खुली चर्चा कोई एक-दूसरे से नहीं करता था। लेकिन वैद्य जी और मेरे बीच कोई परदा नहीं था और बिना किसी आशंका, सन्देह के हम एक दूसरे से खुली-चर्चा कर लेते थे। आश्रम छोड़ने के लगभग एक-दो वर्ष पश्चात् मेरा कनखल जाना हुआ। अपने आने की पूर्व सूचना मैंने वैद्य जी को नहीं दी थी क्योंकि उन्हें सरप्राइज देना चाहता था। मैंने जब उनके कमरे का पिछला दरवाजा खटखटाया तो मुझे देख सकपका गये और आलिंगनबद्ध होकर मिले। दो चार घंटे आश्रम में रहने के बाद जब लौटने लगा तो उनकी आंखें सजल हो गईं और बोले कादियाण साहब! मैंने आपसे कभी कोई बात नहीं छुपाई लेकिन जाने-अनजाने एक बात आपसे जानबूझ कर छिपाई जो गुनाह बन कर मुझे कचोटती रहती है।'' मैं भांप गया कि कौन-सी बात उन्होंने मुझसे छिपाई थी। मैंने कहा - पंडित जी मैं जानता हूँ कि आपने कौन-सी बात मुझसे छिपाई है। आपकी विवशता को मैं समझ सकता हूँ अत: उसे लेकर किसी प्रकार का गिला-शिकवा न मुझे आपसे पहले रहा न अब रहेगा। उनके आग्रह पर जब मैंने हकीकत बयान की तो वे अवाक रह गये। कनखल आश्रम छोड़ने में जहाँ अन्य अनेक कारण थे उनमें से एक कारण यह हकीकत भी रही थी और मैंने जानबूझकर ही इसके परिणामों को जानते-समझते यह सब किया था। इसे निष्पाप आत्मीयता ही मानना होगा कि एक छिपाई गई बात को जो आचार्य बालकृष्ण जी ने उन्हें बताई थी वे मुझसे छिपाते रहे और उसे लेकर भीतर ही भीतर खिन्नता, ग्लानि, विचलता अनुभव करते रहे।

उनकी मुखर आत्मीयता मुझे तब देखने को मिली जब 22 मार्च, 2005 को मेरे दामाद का देहरादून छावनी में असामयिक निधन हुआ। कई दिन बाद जब मैं लौटा तो वे शोक-संवेदना प्रकट करने मेरे कमरे में आये तो उनके मुख से एक शब्द नहीं निकल रहा था, वे पलंग पर बैठे बच्चों की तरह फफक कर रो रहे थे, आंखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। शोक-संवेदना प्रकट करने और भी अनेक अन्तेवासी आये थे लेकिन यह दृश्य विरल था। मैं भी अपने को कुछ क्षण संभाल नहीं पाया। सहज होने पर मैंने वैद्य जी के कंधे पर हाथ रखते हुए ढाढ़स बंधाने का प्रयास किया। तब वे और फूट पड़े और बोले कादियाण जी! आपके दु:ख ने आज मेरा दु:ख और बढ़ा दिया है। तुम्हारी बेटी की तरह मेरी बेटी भी इसी उम्र में विधवा हुई थी। ससुराल वालों ने उसे पूरी तरह ठुकरा दिया था अत: उसका व उसके बेटे का भार मुझे अपने कमजोर कंधों पर उठाना पड़ा था। यही भार अब आपके कंधों पर आ पड़ा है जिसे उठा पाना सामाजिक दृष्टि से सहज नहीं है। इन शब्दों में उनकी व्यावहारिकता, उनका अनुभव, उनकी आत्मीयता सभी कुछ झलक रहा था। निश्चय ही यह विपदा मेरे लिए भारी थी जिसे वैद्य जी की आत्मीयता और सान्निध्य ने काफी हलका बना दिया था। उनके अनुभवों ने आगे चलकर मुझे भारी राहत दी। समय-समय पर जब भी उनसे संवाद होता तो बेटी और धेवते-धेवती की कुशल-क्षेम अवश्य पूछते थे। स्वार्थपरता और औपचारिकता से भरे इस जीवन प्रवाह में ऐसी आत्मीयता की अनुभूति निश्चय ही मेरे लिए किसी औषधि व सौभाग्य से कम नहीं रही, जिसके लिए मैं वैद्य जी का हमेशा ऋणी रहा हूँ। इसके विपरीत ऐसे नाजुक हालात में किसी का निस्संग, निर्लिप्त, असम्बद्ध व उदासीन बना रहना भी प्राय: दिखाई दे जाता है। ऐसे व्यक्ति अपने-अपने कारणों से देवता, ऋषि, पैगम्बर भी हो सकते हैं और दानव, राक्षस व शैतान की भूमिका में भी हो सकते हैं। इससे भी ऊपर की आदर्श स्थिति यह है कि मानव मानव ही रहते हुए अपने जीवन का कोई ऐसा अध्याय अथवा पृष्ठ तैयार कर जाये जिसमें मानवता, देवत्व, ऋषित्व, परदु:खकातरता, परोपकार, सहृदयता झंकृत होती हो और सुनने-देखने वाले का मन-मस्तिष्क भी स्पंदित हो जाता हो। आदरणीय वैद्य जी इसी कोटि के दुर्लभ इंसान थे।

वैद्य जी अपने जीवन में भले ही बहुत बड़े अथवा चर्चित हस्ताक्षर न रहे हों लेकिन एक मनुष्य की श्रेष्ठ भूमिका वे अवश्य निभाते रहे। मेरा अनुभव रहा कि चाहते, न चाहते हुए भी यदि उनसे कोई गलत काम हो जाता था तो वे प्राय: अपने को दु:खी महसूस करते थे, प्रायश्चित की भाव-मुद्रा में आ जाते थे, कर्मफल की सच्चाई में विश्वास रखते थे, भगवान से डरते थे। एक घटना का विवरण देने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। आश्रम की ऐसी व्यवस्था, हिदायत व निर्देश था कि चाहे कोई रोगी अंतिम अवस्था, मरणासन्नवस्था में ही क्यों न हो, उसे निराश नहीं करना है बल्कि दिलासा देना है और उसकी जीवन शक्ति को बनाये रखना है। चिकित्सा के व्यवसाय के साथ इस तरह की गूढ़ सच्चाई परम्परा से जुड़ी हुई है लेकिन वैद्य जी इस स्थिति में तब विचलित दिखाई देते थे जब ऐसा कोई रोगी निर्धन व असहाय होता था लेकिन फिर भी हजार-दो हजार की औषधि उसके कफन के साथ बांध दी जाती थी। उन्हें नियम के कारण इस विवशता का दंश कई बार झेलना पड़ता रहा जिसकी चर्चा वे प्राय: मुझसे करते रहते थे। ऐसे अवसरों पर जब उन्हें प्रायश्चित की आग में जलता देखता तो मेरा सुझाव होता वैद्य जी! इसमें आपका क्या दोष है यह तो यहां की नीति और व्यवस्था का दोष है जिसका दायित्व बनाने वालों पर आता है। कहावत है हाँ की नौकरी न का घर। इस अवस्था में आपकी मजबूरी है जो नौकरी करनी पड़ रही है। यह काम आपके माध्यम से यदि नहीं होगा तो किसी और के माध्यम से होगा अत: आप क्यों दु:खी होते हैं। फिर भी ऐसे मामलों में वे कहीं न कहीं अपने को दोषी मानते रहे। एक-दो बार उन्हें व्यवस्थापक की झाड़ भी खानी पड़ी क्योंकि जिन रोगियों का रोग असाध्य था, ला-इलाज था उन्हें उन्होंने साफ-साफ बतला दिया था और अमुक रोगियों ने इसकी शिकायत व्यवस्थापक से कर दी थी कि आपका दावा कुछ है और आपके वैद्य जी कुछ कह रहे हैं। प्रचार और हकीकत के इस अनैतिक व्यवसाय को वैद्य जी कभी स्वीकार नहीं कर पाये। कनखल से वापसी की व्यथा-कथा जब उन्होंने मुझे दूरभाष पर सुनाई तो मैंने मजाक किया - वैद्य जी! कनखल के पाप आप कनखल में ही धो आये हैं, अब आपका बुढ़ापा निष्कंटक कटेगा। उन्हें इस बात का मलाल रहा कि कनखल आश्रम में जो सेवा कार्य उन्होंने पूरी निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण भावना से किया उसे परमार्थ नहीं नौकरी माना गया और उन्हें अन्तेवासी नहीं नौकर समझा गया अन्यथा रामकृष्ण मिशन अस्पताल में उन्हें लावारिस न छोड़ दिया जाता। यह तो परमपिता परमात्मा की अनुकंपा रही कि सुभाष पुण्डीर जी ने उस समय जो सेवा सुश्रुषा की उसमें मैं अपने को शारीरिक व मानसिक रूप से उबार पाया। आश्रम की यह कृतघ्नता उन्हें बाद तक सालती रही।, जब उन्हें गत वर्ष पतंजलि योग पीठ, बहादराबाद बुलाकर सार्वजनिक रूप से अभिनन्दित किया गया तब जाकर इस स्थिति में परिवर्तन आया।

व्यक्ति जीवन में पारिवारिक दायित्व को ही नहीं अपितु अपने व्यावसायिक, सामाजिक व धार्मिक दायित्व को भी निभाता है। वैद्य जी इसके प्रति पूर्णतया जागरूक व प्रयासरत रहे। एक समग्र, संतुलित और श्रेष्ठ जीवन जीने का उन्होंने प्रयास किया। आधुनिक परिवेश की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि हम एक नेक इंसान के रूप में कैसे सफलतापूर्वक जीवन-यापन कर सकते हैं और कैसे समाज को इंसानियत की महक से गुलजार व सुवासित रख सकते हैं। वे हृदय से वास्तव में उदार, उदात्त विशाल और संवेदनशील थे जैसा कि दो वर्ष तक उनके निकट सान्निध्य का मेरा अनुभव रहा। उनकी वृद्धावस्था में वर्षों का अनुभव और चिन्तन स्पष्ट झलकता था। मेरे लेखन से वे विशेष रूप से प्रभावित थे और उस पर अपनी बेवाक टिप्पणी भी खुलकर करते थे। उनका ये मिजाज मुझे बहुत ही अच्छा लगता था क्योंकि उससे कुछ नया सीखने को मिलता था जो लेखनी को स्वस्थ व धारदार बनाने के लिए आवश्यक था। 'योग संदेश' में प्रकाशनार्थ उन्होंने एक लेख अपने लिए मुझसे लिखवाया जो योग से सम्बन्धित था। तब मैं कनखल आश्रम छोड़कर दिल्ली चला आया था और वे वहीं कार्यरत थे। लेख के कुछ अंशों को वे पचा नहीं पा रहे थे अत: फोन कर मुझसे उनकी प्रामाणिकता पर स्पष्टीकरण मांगा। मैंने स्थिति स्पष्ट की और सन्दर्भ का भी उल्लेख किया लेकिन फिर भी उन्हें तसल्ली न हुई। मेरा लेख लेकर वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के योग विषयक एक प्रोफेसर के पास गये। इस पर उनकी जो टिप्पणी उन्हें प्राप्त हुई उससे वे गदगद हुए और लेख 'योग संदेश' में छपवाया। बाद में ये सब बातें उन्होंने मुझे बताई। आज के जीवन में ऐसे निष्कपट व्यक्ति चिराग लेकर ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते।

स्मृति शेष वैद्य जी किसी रस्म अदायगी व औपचारिकता के मोहताज नहीं रहे फिर भी उनके निधन पर परमपिता परमात्मा से मेरी यही कामना रहेगी कि उनका परलोक यशस्वी रहे, मनस्वी रहे, तपस्वी रहे, बर्चस्वी रहे जिससे उनके सम्पर्क व सान्निध्य में रहने वाले सफल व समृद्ध जीवन जीने में सन्नद्ध रहे। मृत्यु के समक्ष हम असहाय प्राणी इससे अधिक की दुआ और क्या कर सकते हैं? छोटा, संक्षिप्त और अल्प ही सही जो अध्याय वे मेरे जीवन में अनुस्यूत कर गये हैं वह निश्चय ही मेरे लिए अमिट है, चिरस्थायी है जो उनकी स्मृति, छवि और व्यक्तित्व को बनाये रखेगा, प्रेरणा देता रहेगा। आवागमन की इस दुनिया में जो आया है जो अपनी स्मृति और प्रभाव को दूसरों के मन-मस्तिष्क पर अंकित कर जाये। इस दृष्टि से वैद्य जी ने एक सफल जीवन जीया।

स्वाईन फ्लू से लड़ने में भेषज यज्ञों का आयोजन

जयपुर : वर्तमान में स्वाईन फ्लू ने उत्तर भारत के कई राज्यों में पैर पसार रखे हैं। राजस्थान में इस रोग से पीड़ित व मृतक सर्वाधिक हैं। जबकि चिकित्सा एवं औषधीय उपचार कारगर नहीं हो पा रहे, स्वाईन फ्लू निवारण यज्ञ सीमित (आर्य समाज) जयपुर के तत्वावधान में इसका प्रसार रोकने के लिए भेषज यज्ञ श्रृंखला प्रारम्भ कर दी गई है।

अग्नि में आहुत दृव्य की शक्ति अनेक गुणा बढ़कर रोगाणुओं को नष्ट करने में समर्थ हैं, अत: इन यज्ञों के लिए सामग्री के घटक द्रव्य, राष्ट्रीय आयुर्वेद विभाग के विशेषज्ञों की अनुशंसा से मिलाए गए हैं।

यज्ञ समिति के संयोजक यशपाल 'यश' के अनुसार नगर में अब तक मालवीय नगर, अशोक नगर (गोपालपुरा), हिण्डौन हाउस, महेश नगर, विश्वेश्वरैया नगर, महेश नगर तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा भवन परिसर में भेषज यज्ञ सम्पन्न हो चुके हैं। सार्थक परिणाम देख कर भारी जन सहयोग व संचालन हेतु आगामी अनुरोध भी प्राप्त हो रहे हैं।

- प्र. ईश्वर दयाल माथुर

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 48वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ओडिशा में आर्यों के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना के 48वें वार्षिक महोत्सव पर दो होनहार युवक ब्रह्मचारी अंकित कुमार एवं ब्रह्मचारी महीधर आर्य ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन देश धर्म के लिए समर्पित किया तथा श्री स्वर्गीय चौ. मित्रसेन जी आर्य की पुण्य स्मृति में पूज्य स्वामी सुधानन्द जी सरस्वती, पूज्य डॉ. ब्रह्ममुनि जी वानप्रस्थी (महाराष्ट्र), महात्मा चैतन्यमुनि जी (हिमाचल प्रदेश) का सम्मान 21 हजार रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र के साथ किया गया। इसी क्रम में 30 वानप्रस्थियों एवं 16 आर्य वृद्धों तथा गुरुकुल में दीक्षित ब्रह्मचारियों के माता-पिता का सम्मान भी किया गया। महोत्सव का शुभारम्भ अथर्ववेद परायण महायज्ञ तथा ओ३म् पताकोत्तलन के साथ हुआ। खरियार रोड नगर में भव्य शोभायात्रा भी निकाली गई। इसी अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वानों के उद्‌बोधन के साथ महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री सुदर्शन भगत जी एवं स्थानीय विधायक श्री बसंत भाई पण्डा जी भी महोत्सव में जनता को सम्बोधित करने के लिए पधारे थे।

- डॉ. कुञ्जदेव मनीषी

thearyasamaj.org

शहीद चन्द्रशेखर आजाद की पुण्य तिथि 27 फरवरी को

ग्राम बालन्द जिला रोहतक में वैदिक सतसंग समारोह का शानदार त्रिदिवसीय आयोजन

ग्राम बालन्द जिला-रोहतक में अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की पुण्य तिथि के अवसर पर 27 फरवरी से त्रिदिवसीय वैदिक सतसंग समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रथम दिवस सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। अपने ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी जी ने देश, जाति पर बलिदान होने वाले देशभक्तों के प्रेरक प्रसंग सुनाकर श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। स्वामी जी ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी आधुनिक युग के निर्माता देश भक्तों को भुलाती जा रही है। इन्हीं देशभक्त बलिदानियों के त्याग व बलिदान के कारण आज हम सब स्वतन्त्र वातावरण में सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इन्हीं बलिदानियों में से एक थे शहीद चन्द्रशेखर आजाद। चन्द्रशेखर आजाद के अन्दर बचपन से ही गजब का साहस था वे बचपन से ही राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत थे। उनके जीवन की प्रसिद्ध घटना उनके बचपन से ही जुड़ी है। उन दिनों बनारस में असहयोग आन्दोलन की लहर चल रही थी। विदेशी माल न बेचा जाये इसके लिए लोग दुकानों के आगे लेटकर धरना देते थे। बालक चन्द्रशेखर भी एकदिन धरना देते पकड़ा गया। वह पारसी मजिस्ट्रेट मि. खरेघाट की अदालत में पेश किया गया। मि. खरेघाट बहुत कड़ी सजायें देते थे। चन्द्रशेखर से जब उसने पूछातुम्हारा नाम क्या है? तो उसने उत्तर दिया आजाद। तुम्हारे पिता जी का क्या नाम

है तो उसने उत्तर दिया मेरे पिता जी का नाम है स्वाधीन। तीसरा प्रश्न था तुम्हारा घर कहाँ हैं उत्तर मिला मेरा घर जेलखाना है। मजिस्ट्रेट इन उत्तरों से चिढ़ गया उन्होंने बालक चन्द्रशेखर को पन्द्रह बेतों की सज़ा सुनाई उस समय चन्द्रशेखर की आयु मात्र 14 वर्ष थी। जल्लाद द्वारा चन्द्रशेखर की नंगी पीठ पर जब बेंत पड़ते तो हर बेंत के साथ

चन्द्रशेखर की आवाज़ निकलती भारत माता की जय और इसी घटना के बाद चन्द्रशेखर आजाद कहलाने लगे। चन्द्रशेखर आजाद सहित और न जाने कितने देश भक्तों ने अपना बलिदान देकर हमें स्वन्त्रता प्राप्त कराई।

स्वामी जी ने कहा आज देश के सामने अत्यन्त भयावह परिस्थितियां पैदा हो गई हैं। हमारा युवा वर्ग पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगता जा रहा है उसे देश, जाति, धर्म की लेशमात्र चिन्ता नहीं है इस परिस्थिति को बदलना होगा और इस कार्य के लिए एक मात्र आशा की किरण आर्य समाज के रूप में हमें दिखाई देती है। नैतिकता, ईमानदारी, परोपकार, देश भावना जैसे गुण जिनका लोप होता जा रहा है। आज पुनः इन गुणों को युवा वर्ग में पैदा करने की आवश्यकता है जिसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि पूरे देश में युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने का प्रयास करें और एकजुट होकर इस लड़ाई को लड़ें।

इस अवसर पर आचार्य जितेन्द्र एडवोकेट प्रधान शिवाजी कॉलोनी रोहतक विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे और उन्होंने सारगर्भित व्याख्यान से श्रोताओं को प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम के तीसरे दिन सीकर से सांसद प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। ज्ञातव्य हो कि ग्राम बालन्द स्वामी जी का जन्म स्थान भी है। स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन से कार्यकर्ताओं में जोश भर दिया और नये उत्साह का संचार हुआ।

28 फरवरी को बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षता बहन पूनम आर्या ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में हो रहे महिलाओं पर अत्याचार एवं अपमान जनक घटनाओं के लिए पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता को दोषी बताया। उन्होंने कहा कि संस्कार केवल लड़कियों को ही नहीं लड़कों को भी देना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज दोनों को ही चरित्र की शिक्षा देने की जरूरत है। उन्होंने कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध युवाओं को आगे आने की प्रेरणा दी। कन्या भ्रूण हत्या को उन्होंने अपराध ही नहीं पाप बताया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, आचार्य सन्तराम, ब्र. दीक्षेन्द्र, सत्यदेव शास्त्री, महाशय भगवान सिंह आर्य, डॉ. रामवीर शास्त्री, डॉ. जगदीप शास्त्री, मनजीत सिंह शास्त्री, जयवीर शास्त्री आदि का विशेष सहयोग रहा। इस कार्यक्रम का सम्पूर्ण संयोजन प्रसिद्ध समाजसेवी अनुभवी संगठन श्री शिव कृष्ण आर्य एवं उनके विशिष्ट सहयोगी श्री संजय ढाका ने किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्य समाज राखी जिला हिसार के वार्षिकोत्सव में

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आर्यों से आह्वान

हरियाणा में बेटी बचाओ जन-चेतना यात्रा का समापन 23 फरवरी को चण्डीगढ़ में हुआ। 24 फरवरी को हिसार की प्रसिद्ध आर्य समाज राखी के उत्सव पर आचार्य सन्तराम जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी, बहन पूनम तथा प्रवेश आर्या सहित दल बल के साथ स्वामी आर्यवेश जी वार्षिकोत्सव में पधारे। कार्यक्रम चौक में सुन्दर व्यवस्था के साथ आयोजित किया गया था। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मपुत्र युवा संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी जिला आर्य युवक परिषद् के प्रधान दलबीर सिंह मुकलान, जयवीर सोनी आदि भी उपस्थित थे। इस अवसर पर आर्य समाज की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका संगीता आर्या के मन-भावन भजनों ने समा बांध दिया।

इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने अपने जोशीले उद्बोधन में बताया कि बेटी बचाओ अभियान का मुख्य उद्देश्य नारी के अस्तित्व को बचाने का है। महिलाओं को उनके आत्म सम्मान, स्वाभिमान, समानता के हक दिलवाने के लिए उनका संघर्ष जीवन की आखिरी श्वांस तक चलता रहेगा। बहन प्रवेश आर्या ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज आवश्यकता नारी समाज को अपने स्वाभिमान को जगाने की है। उनकी मदद और कोई नहीं स्वयं उन्हें ही करनी होगी। आवश्यकता केवल मात्र उठ खड़े होने की है। नारी में वह शक्ति है कि वह कोई भी कार्य कर सकती है। आवश्यकता अपनी ताकत को पहचानने की है।

इस अवसर पर अपने ओजस्वी धारा प्रवाह उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने युवाओं को इंगित करते हुए कहा कि वास्तव में देखा जाये तो युवा वर्ग ही किसी समाज या राष्ट्र की शक्ति होती है। जिस समाज या राष्ट्र में युवा वर्ग में जागरूकता और जुझारूपन नहीं है वो समाज या राष्ट्र कभी भी उन्नति के मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता। जहाँ कहीं भी नव-निर्माण का सूत्रपात हुआ वह युवा वर्ग के द्वारा ही हुआ। लेकिन आज हमारे देश में चारो तरफ पाश्चात्य सभ्यता का बोलबाला है, युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर अपनी संस्कृति खोता जा रहा है और नशे के दलदल में धंसता जा रहा है। बढ़ती नशाखोरी से समाज व राष्ट्र को गहरी क्षति पहुंच रही है। हमारा आप सभी से आह्वान है कि सारे देश में आन्दोलनों के माध्यम से शराबबन्दी और नशे के विरुद्ध आवाज़ उठाई जाये और पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाये। स्वामी जी ने कहा कि युवकों को आर्य समाज से जोड़ने के लिए विशेष कदम उठाये जाने चाहिए। हजारों नव-युवकों को

चरित्र निर्माण शिविरों में लाया जाये और उन्हें भारतीय संस्कृति से परिचित कराया जाना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि हमारे युवाओं में असीमित बल है, साहस और सामर्थ्य है, आवश्यकता मात्र इस बात की है कि उनको इस शक्ति की पहचान कराई जाये और सृजनात्मक कार्यों में उनका उपयोग किया जाये। हमें युवाओं की इसी विशेषता को आर्य समाज में प्रयोग करना है और उनको सक्रिय करना है। स्वामी जी ने आर्यजनों का आह्वान किया कि अब समय उठ खड़े होने का है और सारे देश में युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने की अलख जगाने की है। स्वामी जी ने कहा कि यदि गाँव के अधिकांश लोग चाहते हैं तो गाँव-गाँव से शराब के ठेके बन्द किये जाने चाहिए। प्रत्येक गाँव में लोगों को नशे के विरुद्ध जागरूक करके शराब के ठेके बन्द कराये।

कार्यक्रम का मंच संचालन अत्यन्त कुशलता पूर्वक श्री सुभाष आर्य ने किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद किया

आत्म विस्मृत राष्ट्र को गौरव बोध से भर दिया दयानन्द सरस्वती ने

अधनंगे संन्यासी स्वामी दयानन्द ने भारत में राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद किया उन्होंने आत्मविस्मृति से ग्रस्त राष्ट्र में सिंह के समान राष्ट्रवाद का उष्ण रक्त संचार कर गौरव बोध से भर दिया, वह दयानन्द ही थे जिन्होंने सबसे पहले हमें स्वराज्य का पाठ पढ़ाया, उन्होंने भारत भारतीयों के लिए है की घोषणा सर्वप्रथम किया यह बात ऐनीबेसेंट ने भी स्वीकार किया उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश भारती ने दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस के अवसर पर शनिवार को काशी आर्य समाज के सभाकक्ष में आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि स्वराज के साथ स्वभाषा का उद्घोष कर स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र की दिशा तय कर दी और विश्वगुरु पद पनु: अधिष्ठित होने का ब्लूप्रिंट तैयार कर दिया था। विशिष्ट अतिथि श्री रमाशंकर आर्य पूर्व उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ने बतलाया कि लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी की वैचारिक पृष्ठभूमि में स्वामी दयानन्द के विचारों के प्रभाव को इन्कार नहीं किया जा सकता है।

पूर्व सभासद लीलाराम सचदेवा ने कहा कि दयानन्द सरस्वती सांस्कृतिक पुर्नजागरण के सिरमौर थे, उन्होंने स्त्री-पुरुषों की समानता एवं दलितोत्थान कार्यक्रमों की नींव रखी।

आर्य विदुषी डॉ. गायत्री आर्या ने बतलाया कि स्वामी दयानन्द ने कट्टरपंथियों के वेदों पर एकाधिकार को चुनौती दी व वेदाध्ययन का अधिकार सभी के लिए सुलभ कराया।

अध्यक्षीय सम्बोधन देते हुए काशी आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" ग्रन्थ में दुनिया के सभी धार्मिक सम्प्रदायों के मतों की समीक्षा की है और उन्होंने कथित आस्था की रट लगाने वालों के विरुद्ध तार्किक बुद्धिवाद और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को जायज ठहराया।

आर्य गायक श्री रमेश जी आर्य एवं श्री मोती लाल आर्य ने सुमधुर भजनों एवं गीतों की प्रस्तुति कर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर काशी आर्य समाज के मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री, कोषाध्यक्ष डॉ. विशाल सिंह, श्रीमती प्रतिभा सिंह, बृजभूषण सिंह, शम्भूनाथ जी, कुमारी सत्यनिष्ठा आर्य, श्री एस. एन. प्रसाद कुशवाहा, उदय आर्य, सुश्री हेमा आर्य, विभा आर्य, डॉ. शिवकुमारी आदि वक्ताओं ने विचार व्यक्त करते हुए उपस्थिजि दर्ज कराई।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, पं. ज्ञान प्रकाश आर्य व श्री मोतीलाल आर्य के पौरोहित्य में डॉ. जय प्रकाश भारती यजमान रहे। अतिथियों का स्वागत कोषाध्यक्ष डॉ. विशाल सिंह, संयोजन लालचन्द आर्य, संचालन प्रकाशनारायण शास्त्री ने किया। शांतिपाठ मोतीलाल आर्य ने तथा धन्यवाद प्रकाश श्रीनाथ सिंह ने किया।

- प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री, काशी आर्य समाज, वाराणसी-221001

बच्चे ही राष्ट्र के आधार स्तम्भ होते हैं

- देवेन्द्रपाल वर्मा

दिनांक 2 फरवरी, 2015 को डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, बुढ़ाना का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा उत्सव के मुख्य अतिथि थे। उनके वहां पहुंचने पर विद्यालय के प्रबन्धक एवं उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. श्री अरविन्द कुमार ने माल्यार्पण एवं शाल उढ़ाकर उनका स्वागत किया। बच्चों के विविध कार्यक्रम हुए।

सभा प्रधान जी ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि बच्चे ही राष्ट्र का आधार स्तम्भ होते हैं। बच्चों का निर्माण करने में माता-पिता और गुरुजनों का विशिष्ट योगदान होता है।

महर्षि दयानन्द का जब अभ्युदय हुआ तो उन्होंने पराधीनता के मूल में अवैदिक शिक्षा, नारी शोषण, ढोंग, पाखण्ड, जाति-पांति, ऊँच-नीच के भेद को पहचाना। फिर उन्होंने इस सबके विरुद्ध आवाज उठाई। आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की और वैदिक शिक्षा पद्धति चलाने पर जोर दिया अनेक गुरुकुल व बालक बालिकाओं के विद्यालय खुले। जिनमें पढ़कर उत्तम नागरिक तैयार होने लगे।

हम अपने विद्यालयों में सरकारी शिक्षा के साथ ही वैदिक शिक्षा के पाठों का समावेश करें उनकी परीक्षाओं की भी विशेष व्यवस्था करें ताकि बालक बालिकाओं का नैतिक चरित्र उत्तम हो और वे राष्ट्र की उन्नति के आधार बन सकें।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. ने कक्षा 1 से 12वीं तक के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छपवाई है। आर्य समाज के सभी विद्यालय अनिवार्य रूप से उन पुस्तकों को अपने विद्यालय में मंगाकर उन्हें पाठ्यक्रम में समाहित करें।

अन्त में भाषण को विराम देते हुए प्रधान जी ने विद्यालय के संचालक मण्डल प्रधानाचार्य व सभी शिक्षक, शिक्षिकाओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप सभी शिक्षा के इस पुनीत कार्य को करते हुए समाज व राष्ट्र निर्माण में योगदायी बनने का सौभाग्य प्राप्त करने में समर्थ हों ऐसी मेरी प्रभु से प्रार्थना है। उत्सव में 3000 बच्चे व लगभग 1500 अभिभावक गण उपस्थित थे।

विशेष रूप में चितरंजन स्वरूप, राज्य मंत्री, उ. प्र. सरकार जिला विद्यालय निरीक्षक मुजफ्फरनगर, एस. डी. एम. बुढ़ाना, राजीव कुमार, अध्यक्ष, रेखा त्यागी-प्रधानाचार्या की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

महाशिवरात्रि पर एक आयोजन

आर्य समाज, राजनगर में सदैव की भांति ऋषि बोधोत्सव बड़े उत्साह एवं उल्लास से मनाया गया। मुख्य वक्ता डॉ. वेदपाल जी ने अपने वक्तव्य में 'शिव का सत्य स्वरूप' विषय पर अपने विचार प्रगट किये। इसी प्रकार प्रसिद्ध भजनोपदेशक ने अपने भजनों के माध्यम से शिवरात्रि के अवसर पर बालक मूलशंकर की उपस्थिति की गरिमा का दर्शन कराया।

- बाबूराम शर्मा विभाकर

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक हरियाणा में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल में उपलब्ध सुविधाएं एवं आवश्यक निर्देश

★ लिखित परीक्षा द्वारा 6 अप्रैल को मैरिट के आधार पर प्रवेश। नियमावली उपलब्ध है।
★ प्रविष्ट छात्रों का हॉस्टल में रहना आवश्यक है।
★ संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
★ सी.बी.एस.ई. बोर्ड नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त (मान्यता क्रमांक 531114) है।
★ इंग्लिश मीडियम (अंग्रेजी माध्यम)।
★ 10+1, 10+2 में आर्ट, कॉमर्स तथा नॉन मैडिकल संकाय।
★ आर्मी, नेवी तथा एयरफोर्स के लिए भर्ती में प्रशिक्षण।
★ सी.सी.टी.वी. कैमरों की व्यवस्था।
★ पुस्तकालय, वाचनालय, कम्प्यूटर तथा विज्ञान की आधुनिक प्रयोगशालाएं।
★ इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के लिए भाषा प्रयोगशाला।
★ शुद्ध जल का निजी प्रबन्ध।
★ संस्था में स्थापित पं० रामप्रसाद बिस्मिल खेल अकादमी के माध्यम से खेल प्रशिक्षण। प्रशिक्षित कोचों एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों द्वारा समय-समय पर दिशा निर्देश।
★ शुद्ध दूध के लिए निजी गोशाला।
★ 6 एकड़ का स्वच्छ तथा रमणीय परिसर।
★ स्टेशनरी तथा खाद्य पदार्थों के लिए कैन्टीन तथा वस्तु भण्डार की सुविधा।

3 K.M. STONE FROM BUS STAND, LADHOT ROAD, ROHTAK (HARYANA)
Contact : 01262-217550, 09992403892, 09467240298, 09416629972

आर्य समाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर का 87वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नई मण्डी, दयानन्द मार्ग (वकीलरोड) मुजफ्फरनगर का 87वां वार्षिकोत्सव (नवसंस्येष्टि महोत्सव) दिनांक 4, 5 व 6 मार्च, 2015 दिन बुधवार, बृहस्पतिवार व शुक्रवार को धूमधाम के साथ समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। उत्सव में अनेकों संन्यासी महात्माओं के साथ-साथ आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेवसिंह बेधड़क (बागपत) अपने-अपने उपदेशामृत की वर्षा करेंगे। अत: अनुराध है कि अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

- आर. पी. शर्मा, मंत्री

आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर (भरतपुर) राजस्थान प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल में महर्षि कृत आर्ष पाठ विधि तथा राज. मि. शि. बोर्ड की दोनों पाठ विधि अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। कन्या गुरुकुल में भव्य छात्रावास, सुन्दर यज्ञशाला, विद्यालय भवन अपना ट्यूबवैल, क्रीड़ा स्थल आदि की सुन्दर व्यवस्था है। 31 मार्च, 2015 से कक्षा 4, 5 व 6 में प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। इस वर्ष केवल 30 छात्राओं को ही प्रवेश दिया जायेगा। आप अपनी सुपुत्री के उज्जवल भविष्य तथा सुसंस्कारों के लिए कन्या गुरुकुल में प्रवेश करायें।

- गुरुकुल में कम्प्यूटर लैब स्थानित है।
- हारमोनियम, तबला, ढोलक आदि वाद्य यंत्र उपलब्ध है।
- सिलाई, कढ़ाई आदि का प्रशिक्षण तथा बुक बाईडिंग का प्रशिक्षण दिया जाता है।
- सरलतम विधि से वेदपाठ तथा 16 संस्कारों पर आधारित कर्मकाण्ड तथा उपेदशिका एवं भजनोपदेशिका का प्रशिक्षण अनविार्य रूप से दिया जाता है।

शीघ्र सम्पार्क करें- कु. प्रियंका आर्या, कु. ख्याति शास्त्री
सामवेदा, मो.:-09694892735, 08441087408

वैदिक नित्यकर्म विधि

लेखक एवं सम्पादक - आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य, एम. ए.

इस पुस्तक में प्रात:काल के मन्त्र, संध्या, ईश्वरस्तुति, प्रार्थनामंत्र, दैनिकयज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियां, अमावस्या-पूर्णिमा आदि के विशेष मंत्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन-शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त। विशेष बात यह है कि सब मंत्र मोटे और लाल, सभी मंत्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है। 23X36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, मूल्य एक प्रति 100 रुपये है। डाक व्यय अलग होगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान
मधुर प्रकाशन - 2804, गली आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2
दूरभाष :- 011-23238631,
(मधुर शास्त्री - मो.:- 9810431857)

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 13–14 मार्च, 2015
प्रकाशन की तिथि : 12 मार्च, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
12 से 18 मार्च, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

राजा वरुण सब-कुछ जानता है

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।।

—अथर्व० ४/१६/२

ऋषिः—ब्रह्मा।। देवता—वरुणः।। छन्दः—त्रिष्टुप्।।

विनय—पाप से वास्तव में डरने वाले मनुष्य संसार में विरले ही होते हैं। प्रायः लोग पाप करने से नहीं डरते, किन्तु पापी समझे जाने से डरते हैं। जहाँ कोई देखने वाला न हो वहाँ अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाना, कोई पाप कर लेना, साधारण बात है। पाप व अपराध कर्म से बचने की कोई कोशिश नहीं करता; कोशिश तो इस बात की होती है कि हम वैसा करते हुए कहीं पकड़े न जाएँ। यही कारण है कि मनुष्य अपने बहुत–से कार्य छिपकर अकेले में करने को प्रवृत्त होता है, परन्तु यदि उसे इस संसार के सच्चे, एकमात्र राजा वरुणदेव की जानकारी हो तो वह ऐसे घोर अज्ञान में न रहे। यदि उसे मालूम हो कि वे जगत् के ईश्वर वरुण भगवान् सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा हैं तो वह पाप के आचरण करने से डरने लगे; वह एकान्त में भी कभी पाप में प्रवृत्त न हो सके। यदि हम समझते हैं कि हम कोई काम गुप्त रूप में कर सकते हैं तो सचमुच हम बड़े धोखे में हैं। उस सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक वरुण से तो कुछ भी छिपाकर करना असम्भव है। जब हम दो आदमी कोई गुप्त मन्त्रणा करने के लिए किसी अँधेरी–से–अँधेरी कोठड़ी में जाकर बैठते हैं और सलाहें करने लगते हैं, तो यद्यपि हम समझ रहे होते हैं कि हम दोनों के सिवाय संसार में और कोई इन बातों को नहीं जानता, तथापि इन सब बातों को वह वरुण देव वहीं तीसरा होकर बैठा हुआ सुन रहा होता है। यदि हम वहाँ से उठकर किसी किले में जा बैठें, या किसी सर्वथा निर्जन वन में पहुँच जाएँ तो वहाँ पर भी वह वरुणदेव तो तीसरा साक्षी होकर पहले से बैठा हुआ होता है। उससे छिपाकर हम कुछ नहीं कर सकते। यदि हम दूसरे किसी आदमी को भी कुछ नहीं बताते, केवल अपने ही मन में कुछ सोचते हैं, तो वह वरुण उसे भी जानता है, सब सुनता है। हमारे चलने या ठहरने को, हमारी छोटी–सी–छोटी चेष्टा को वह जानता है। जब हम दूसरों को धोखा देते हैं, ठग लेते हैं और समझते हैं कि इसका किसी को पता नहीं लगा, तब हम स्वयं कितने भारी धोखे में होते हैं। क्योंकि, उस वरुण को तो सब–कुछ पता होता है और हमें उसका फल भोगना पड़ता है।

शब्दार्थ—**यः तिष्ठति, चरति**=जो मनुष्य खड़ा है, या चलता है, **यः च वञ्चति**=जो दूसरों को ठगता है **यः निलायं चरति**=जो छिपकर कुछ करतूत करता है **यः प्रतंक चरति**=जो दूसरों को भारी कष्ट आदि देकर अत्याचार करता है और **द्वौ सन्निषद्य**=जब दो आदमी मिलकर, एक–साथ बैठकर, **यत् मन्त्रयेते**=जो कुछ गुप्त मन्त्रणाएँ करते है। **तत्**=उसे भी **तृतीयः**=तीसरा होकर **वरुणः राजा**=सर्वश्रेष्ठ सच्चा राजा परमेश्वर **वेद**=जानता है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।